आदि शंकराचार्य

आदि शंकराचार्य एक सिद्धगुरु थे जिनके बारे में ऐसा माना जाता है कि वे आठवीं शताब्दी में हुए थे। उन्होंने अद्वैत वेदान्त की सिखावनियों को सुस्पष्ट रूप दिया व सम्पूर्ण भारत में उनका प्रसार किया। अद्वैत वेदान्त एक दर्शन है जो जीवब्रह्मैक्य [जीवात्मा और ब्रह्म एक हैं] पर केन्द्रित है।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द व बाबा मुक्तानन्द ने अनेक अवसरों पर साधकों का ध्यान श्रीशंकराचार्य के उपदेशों की ओर आकृष्ट किया है। ये उपदेश उन्हीं सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हैं जो सिद्धयोग पथ के दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त हैं। श्रीशंकराचार्य द्वारा लिखित ग्रन्थ, परम आत्मा के शाश्वत स्वरूप और एक साधक की साधना में श्रीगुरु के महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं। श्रीशंकराचार्य, मोक्षप्राप्ति के साधनों के रूप में ध्यान, मन्त्र-जप व चिन्तन-मनन जैसे आध्यात्मिक अभ्यास करने के महत्त्व पर भी प्रकाश डालते हैं।

भारत में चार मठों की स्थापना का श्रेय श्रीशंकराचार्य को दिया जाता है; इनमें से एक-एक मठ, चार मुख्य दिशाओं में स्थापित है। संन्यासियों के दशनामी सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। इनमें से ही एक है, 'सरस्वती परम्परा' जिसमें बाबा जी और गुरुमाई जी तथा सिद्धयोग के सभी स्वामीगण दीक्षित हैं।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।